श्री मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

हे मुनिसुव्रत मेरे भगवन्, सिद्धालय के वासी हो।
आह्वान करूँ आओ जिनवर, मम हृदय कम विश्वासी हो।।
भावों के पीले पुष्पों से, बुला रहा हूँ, आ आजो।
कर्म शत्रु भी शांत हुए हैं, शीघ्र हृदय में बस जाओ।।1।।
मैं हूँ भक्त आपका सच्चा, आप मेरे सच्चे भगवान।
मेरी दुनिया छोटी सी है, रखना मेरा भगवन् ध्यान।।
हृदयांगन में करूँ प्रतीक्षा, बोलो ना कब आओगे।
आश है विश्वास पूर्ण है, नाथ मेरे गृह आओगे।।2।।

ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(हरिगीतिका छंद)

जग में जनम लेकर अनंतों, बार मैं मरता रहा।
जब आपका वैभव लखा तो, देखता ही मैं रहा।।
हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिये।
सब कष्ट बाधायें मिटा भव-सिंधु पार उतारिये।।1।।

ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं...।

स्पर्शित किया चंदन बहुत पर, ताप मिट पाया नहीं।
गंगाम्बु मुक्ताहार शीतल, काम कुछ आया नहीं।।
हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिये।
सब कष्ट बाधायें मिटा भव-सिंधु पार उतारिये।।2।।

ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर सुखों की कामना में, शिवभवन ना पा सका।
पर भाव में अटका रुला हूँ, आत्म पद ना पा सका।।
हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिये।
सब कष्ट बाधायें मिटा भव-सिंधु पार उतारिये।।3।।

ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह चाह विषयों की मिटा दो, पुष्प अर्पण है प्रभो।
दुष्कर्म का नेता यही ह, काम को नाशो प्रभो।।
हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिये।
सब कष्ट बाधायें मिटा भव-सिंधु पार उतारिये।।4।।

ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चिरकाल से जड़ वस्तुओं में, स्वाद आया है प्रभो।
निज ज्ञान रस का स्वाद अब तक, जान ना पाया प्रभो।।
हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिये।
सब कष्ट बाधायें मिटा भव-सिंधु पार उतारिये।।5।।

ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक शिखा से तम मिटेगा, भ्रम रहा मेरा प्रभो।

तमहारिणी वो ज्ञान छैनी, दूरतम करती विभो।।
हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिये।
सब कष्ट बाधायें मिटा भव-सिंधु पार उतारिये।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु आपके ही ज्ञान घट में, ध्यान धूप सुगंध हैं।
मम पास धूप, सुगंध बिन है, गंध आप अनूप हैं।।
हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिये।
सब कष्ट बाधायें मिटा भव-सिंधु पार उतारिये।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
चिर काल से इंद्रिय सुखों के, फल रहा मैं चाहता।
प्रभु दर्श जो मैंने किया नित, आत्म सुख फल चाहता।।
हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिये।
सब कष्ट बाधायें मिटा भव-सिंधु पार उतारिये।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
निज आत्म वैभव का अतिशय, नाथ बतला दीजिये।
मम अघ्र्य को स्वीकार लो प्रभु, ज्ञानधार बहाइये।।
हे नाथ मुनिसुव्रत हमारे, पूर्ण व्रत कर दीजिये।
सब कष्ट बाधायें मिटा भव-सिंधु पार उतारिये।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

प्रभु आनत दिवि से आये, और राजगृहे में आये।
कृष्णा श्रावण द्वितीया दिन, माँ पद्मा उर आये जिन।।
छप्पन कुमारियाँ आई, अंतःपुर बजे बधाई।
माँ स्वप्न देख हर्षायें, नृपराज सुमित्र सुनाये।।1।।
ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अघ्र्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वैशाख वदी तिथि आई, बारस जन्मे जिनराई।
अभिषेक किया मेरु पर, बस अर्ध निमिष में जाकर।।
जो जन्म मरण से डरते, वे प्रभु की पूजा करते।
मैं जामन मरण मिटाऊँ, जन्मोत्सव आज मनाऊँ।2।।
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अघ्र्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वैशाख वदी दशमी थी, प्रभु जाति स्मृति हुई थी।
जब केशलोंच कर लीना, सुर क्षीरोदधि में दीना।।
तेला कर दीक्षा धारी, थे संग सहस मुनिराई।
इंद्राणी चाौक बनाया, दीक्षाकल्याण मनाया।।3।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अघ्र्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जबक प्रभु रहे छद्मस्था, तब मोन रहे भगवंता।
वैशाख वदी तिथि नवमी, हो गये पूर्ण प्रभु भानी।।
चरणों में कमल रचे हैं, जब प्रभु विहार करें हैं।
गुणथान सयोगी पाया, ज्ञानोत्सव देव मनाया।।4।।
ॐ ह्रीं वैशाखकृरूणनवम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अघ्र्यं निर्वपामीति स्वाहा।
फाल्गुन कृष्णा बारस को, प्रभु पाये सिद्धालय को।
ज्यों हैं कपूर उड़ जाता, त्यों प्रभु तन भी उड़ जाात।।

प्रभु सम्मेदाचल आये, निज आतम ध्यान लगाये।
हम भी शुभ अध्य चढ़ायें, और मुक्तिरमा को पायें।।5।।
ऊँ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अघ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

सूरज से नीरज खिले, और स्वाति से सीप।
भव्य कमल तुम से खिले, आओ हृदय समीप।।1।।

(ज्ञानोदयछंद)

दोहा

जय-जय मुनिसुव्रत तीर्थंकर, भक्ति सुमन चढ़ाता हूँ।
है विशाल तव यशगाथा मैं, पूर्ण नहीं कह सकता हूँ।।
शरणआपकी जो आता है, कर्मों का ग्रह मिट जहाता।
जन्म मरण के दुःखों से वह, पल में छुटकारा पाता।।2।।
प्रभु स्वयं में आप विराजे, जान रहे हो सभी जहान।
भव्य जनों के कष्ट मिटाते, सदा प्रभु जी आप महान।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान हुए हैं, राजगृही में शुभ कल्याण।
ऊध्वं मध्य पाताल लोक में, गूँजा प्रभु का यश-जयगान।।3।।
रत्नत्रय आभूषण पहने, जड़ आभूषणका क्य काम।
दोष अठारा रहित हुए है, वस्त्रा शस्त्र का लेश ननाम।।
तीन लोक के स्वयं मुकुट हो, स्वर्ण मुकुट का क्या है काम।
नाथ त्रिलोकी कहलाते हो, फिर भी रहते हो निज धाम।।4।।
भक्त निहारे प्रभु आपको, आप निहारे अपनी ओर।
आप हुए निर्मोही स्वामी, अनंत गुण का कहीं नछोर।
धन्य आपकी वीतरागता, नहीं भकत को कुछ देते।
फिर भी भक्त शरण में आकर, सब कुछ तुमसे पा लेते।।5।।
प्रभु आपके वचन श्रवण कर, आत्म ज्ञान को पाते हैं।
रत्नत्रय धारण कर साधक, शिव पथ में लग जाते हैं।।
चक्री इंद्रादिक के वभव, पुण्य सातिशय से मिलते।
नहीं चाहते किंतु पुण्य को, ज्ञानी निज में रहते।।6।।
काल अनंता बीत गया है, मोह शनीचर सता रहा।
लाखों को प्रभुपार किया है, भक्त हृदय यह बता रहा।।
नाथ अपकी महिमा को मैं, अल्पबुद्धि कैसे गाऊँ।
यही भावना भाता हूँ निज का, निज में दर्शन पाऊँ।।7।।

दोहा

प्रभो भक्त मैं आपका, दुख से हूँ संयुक्त।
एक नजर कर दो प्रभो, होऊँ दुख से मुक्त।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

मुनिसुव्रत स्वामी, हो जगनामी, भव-भव का संताप हरो।
निजपूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' हरो।।
।। इत्याशीर्वादः।।